वैल्हम गर्ल्स स्कूल
देहरादून

अंक: 2 :अगस्त २०२२

क्षितिज

स्वतंत्रता दिवस विशेषांक

सम्पादिका की कलम से...

प्रिय पाठकगण ,

नमस्कार,

स्वतंत्रता ! जितना अप्रतिम यह शब्द है उससे कहीं अधिक सुंदर इसका अर्थ है। ७५वें स्वतंत्रता दिवस के साथ ही भारत ने एक नए युग में प्रवेश कर लिया है। स्वतंत्रता के ७५वर्ष की हमारी गौरवशाली यात्रा यह उम्मीद जगाती है कि आने वाले समय में हम और अधिक तीव्र गति से आगे बढ़ेंगे और इस क्रम में उन सपनों को भी साकार करेंगे, जो हमारे स्वतंत्रता सेनानियों और संविधान निर्माताओं ने देखे और हमारी आज की पीढ़ी भी देख रही है। ये सपने हैं सक्षम, आत्मनिर्भर और समरस भारत के ! एक ऐसे भारत के, जिसमें सभी सुखी और समृद्ध हों और सबके मध्य सद्भाव हो।

हमें प्रतिपल यह स्मरण रखना होगा कि हम सहस्त्रों वर्ष प्राचीन उस संस्कृति और सभ्यता के संवाहक हैं, जो समस्त वसुधा को एक परिवार मानती है और जो सबके कल्याण की कामना करती है। हमें एक ऐसे भारत का निर्माण करना है, जो समस्त विश्व के लिए प्रेरणापुंज बने और नेतृत्व करने की क्षमता से युक्त हो। यह दुष्कर है, किन्तु असंभव नहीं। असंभव को संभव बनाने की चुनौती उस क्षण आसान हो जाएगी, जब राष्ट्र एकजुट होकर आगे बढ़ने के संकल्प से युक्त हो जाएगा। स्वाधीनता का अमृत महोत्सव इस संकल्प शक्ति को जागृत करने में सक्षम हो, इसकी न केवल कामना करनी चाहिए,अपितु इसके लिए अपने-अपने स्तर पर प्रयास भी करने चाहिए। भविष्य के भारत का निर्माण करने और उसे निरंतर सँवारने के लिए सबको एकजुट होना होगा। आजादी के इस अमृत पर्व में शाश्वत भारत की परंपरा, स्वाधीनता संग्राम की परछाई और स्वतंत्र भारत को गौरवान्वित करने वाली प्रगति है। हमारे वेदों का वाक्य है- "**मृत्योः मुक्षीय मामृतात्**" अर्थात, हम दुःख और विनाश से निकलकर अमृत की ओर बढ़ें, अमरता की ओर बढ़ें। यही संकल्प आज़ादी के इस अमृत महोत्सव का भी है। आज़ादी का अमृत महोत्सव अर्थात आज़ादी की ऊर्जा का अमृत, स्वाधीनता सेनानियों से प्रेरणाओं का अमृत, नए विचारों का अमृत,नए संकल्पों का अमृत एवं आत्मनिर्भरता का अमृत। तो आइए एक सुंदर देश के सपने को साकार करने के लिए हम वैल्हमाइट्स भी इस महोत्सव में सम्मिलित होते हुए वैश्विक शांति का प्रयास करें ।

क्षितिज के इस अंक के द्वारा मैं अपने विद्यालय की कनिष्ठ वर्ग की छात्राओं के प्रयास की सराहना करती हूँ जिन्होंने अपनी लेखन क्षमता से हम सभी को आश्चर्य चकित कर दिया और क्षितिज के इस अंक को पूरा करने में निरंतर सहयोग दिया। मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि भविष्य में भी हमारी कनिष्ठ वर्ग की छात्राएँ क्षितिज के लिए निरंतर लेख लिखती रहेंगी और अपना सहयोग देती रहेंगी।

आप सभी को क्षितिज परिवार की ओर से स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ !

मनस्वी पंत

अनुक्रमणिका ..

पृष्ठ १: संपादिका की कलम से
आज़ादी का स्वरूप

पृष्ठ२: विजयी विश्व तिरंगा प्यारा
प्रेरक प्रसंग

पृष्ठ ३: क्या हम आज़ाद हैं?
हमारा देश भारत

पृष्ठ ४: एक मुलाकात ,
गौरव के क्षण

पृष्ठ ५: मेरी स्वतंत्रता

पृष्ठ६: झाँसीवाली रानी
मनु के लिए एक पत्र

पृष्ठ ७: आनंदम्

पृष्ठ ८: आभार

आज़ादी का स्वरूप!!

आज़ादी का अर्थ प्रत्येक व्यक्ति के लिए अलग है। हर व्यक्ति इसे प्राप्त करना चाहता है।यदि आप आजाद नहीं हैं तो आप कभी विकसित नहीं हो सकते। अगर पक्षी आजाद न हों तो वे उड़ नहीं सकते। बीज अगर आजाद न हो तो वह पेड़ नहीं बन सकता। स्वतंत्रता अमूल्य होती है। स्वतंत्रता व्यक्ति को आत्मविश्वासी, कर्तव्यपरायण और संवेदनशील बनाती है। एक आज़ाद देश में ही विज्ञान और साहित्य का विकास होता है। जब सोच में खुलापन होगा तभी समाज आगे बढ़ेगा। आज़ादी को बचा कर रखना ही हमारा परम कर्तव्य है। मानस में संत कवि तुलसीदास ने कहा है-

पराधीन सपनेहुँ सुख नाही।
करि विचार देखो मन माही।

श्रीमती रिचा जोशी पंत
जीव विज्ञान विभाग

विजयी विश्व तिरंगा प्यारा

प्रत्येक स्वतंत्र राष्ट्र का अपना एक ध्वज होता है जो कि स्वतंत्र देश का प्रतीक होता है। भारत में, "तिरंगा" शब्द भारतीय राष्ट्रीय ध्वज को संदर्भित करता है।

भारतीय ध्वज का इतिहास स्वतंत्रता पूर्व युग का है।1904 और 1906 के बीच पहला भारतीय ध्वज अस्तित्व में आया। इसे स्वामी विवेकानंद के एक आयरिश शिष्य ने बनाया था। जिनका नाम सिस्टर निवेदिता था और कुछ समय बाद यह ध्वज सिस्टर निवेदिता के ध्वज के रूप में जाना जाने लगा। इस ध्वज में लाल और पीले रंग शामिल थे। लाल स्वतंत्रता संग्राम का प्रतीक था और पीला जीत का प्रतीक था। उस पर बंगाली में "**बोंडे मातोरम**" लिखा हुआ था।

1921 में पिंगली वेंकैया ने ध्वज का निर्माण किया था। पिंगली वेंकैया ने साल 1916 से 1921 तक करीब 30 देशों के राष्ट्रीय ध्वज का अध्ययन किया, जिसके बाद उन्होंने तिरंगे को डिजाइन किया था। उस समय के तिरंगे और आज के तिरंगे में थोड़ा फर्क है, तब तिरंगे में लाल, हरा और सफेद रंग हुआ करता था। वहीं चरखे के चिन्ह को इसमें जगह दी गई थी। लेकिन 1931 में एक प्रस्ताव पारित होने के बाद लाल रंग को हटाकर उसकी जगह केसरिया रंग कर दिया गया और चरखे के स्थान पर अशोक चक्र को ध्वज में शामिल किया गया। 22 जुलाई 1947 को आयोजित भारतीय संविधान सभा की बैठक के दौरान राष्ट्रीय ध्वज के वर्तमान स्वरूप को अपना लिया गया।

तिरंगे में मौजूद तीन रंग हैं- केसरिया, सफेद और हरा। तीनों रंगों का अपना विशेष महत्व है। केसरिया रंग साहस और बलिदान का प्रतीक है। सफेद रंग शांति और सच्चाई को दर्शाता है। वहीं हरा रंग संपन्नता का प्रतीक है। तिरंगे में सफेद रंग पर नीले रंग में सम्राट अशोक के धर्म चक्र चिन्ह के तौर पर बना है। अशोक चक्र को कर्तव्य का पहिया कहा जाता है, जिसमें शामिल २४ तीलियां मनुष्य के २४ गुणों को दर्शाती हैं।

-आदया , नविका जिंदल और साँची मालपानी
कक्षा 7

आज़ादी का अमृत महोत्सव

आओ हम सब मिलकर आज़ादी
का अमृत महोत्सव मनाएँ।
जन-गण -मन गाकर सबकी
देश भक्ति जगाएँ।
सब एक साथ मिलकर
भारत का तिरंगा लहराएँ।
सभी शहीद हुए वीरों का,
बलिदान याद करवाएँ।
सबके मन में देशभक्ति का
जोश जगाएँ ।
आज़ादी का अमृत महोत्सव मनाएँ।

प्रिशा
कक्षा 7

हमारा अधिकार

आज़ादी है हमारा अधिकार ,
हम करेंगे इसका सम्मान ।
आज़ादी के मतवाले हैं हम,
पीछे नहीं मुड़ने वाले हम।
चाहे कितने साथी रुक जाएँ ,
हम फिर भी आगे बढ़ते जाएँ ।
करेंगे अपने देश की रक्षा,
डट कर रहेंगे सदा ।
आज़ादी है हमारा अधिकार,
हम करेंगे इसे स्वीकार ।

पावनि महेंद्रा
कक्षा 7

प्रेरक प्रसंग

बात तब की है जब श्री लाल बहादुर शास्त्री स्वदेशी प्रचार अभियान में जुटे हुए थे। जगह-जगह पहुँच कर लोगों को विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करने तथा खादी पहनने की प्रेरणा देते। सत्याग्रह में सम्मिलित होने के लिए तैयार रहने का आह्वान करते। एक दिन वे काशी के रेलवे स्टेशन पर रेल से उतरे। बाहर आकर वे ताँगे में बैठ गए। ताँगे वाले ने उन्हें पहचान लिया तथा कार्यालय पहुँच कर उनका सामान उठाकर आदर से उन्हें उतार दिया। शास्त्री जी उसे जेब से निकाल कर किराए के पैसे देने लगे।

ताँगे वाले ने हाथ जोड़ कर कहा, “नेता जी जिस भारत माता की आजादी के लिए आप लू के थपेड़े खाते घूम रहे हैं, क्या मैं उसका बेटा नहीं हूँ ? मैं आपसे किराए के पैसे कैसे ले सकता हूँ ?” एक अनपढ़ ताँगे वाले की राष्ट्रभक्ति की भावना देखते ही शास्त्री जी की आँखें नम हो उठीं।

देश की आजादी के बाद एक दिन शास्त्री जी ने वाराणसी स्टेशन के बाहर उस ताँगे वाले को पहचान लिया। उन्होंने अनेक व्यक्तियों के सामने उसकी पीठ थपथपाते हुए कहा, “भारत के स्वाधीनता आंदोलन में तुम्हारा भी उतना ही योगदान है जितना कि सत्याग्रह कर जेल जाने वालों का।”

" संकलित "

स्वतंत्रता का प्रथम सन्देश

स्वतंत्रता

"हम स्वाधीन देश की सन्तति,
पर राम -राज्य का नाम नहीं।
वस्त्र, भवन,भोजन मत पूछो,
सद्शिक्षा का काम नहीं ,
परमार्थ त्याग कर ,
पूर्ण स्वार्थ में अंध हुए।
ऊँची कुर्सी के चक्कर में ,
पड़कर मति से अंध हुए।
फिर भी यही चाहती जनता ,
देश से दीनता दूर हो।
अमर रहे स्वाधीन देश,
इस स्वतंत्रता संग नूर हो।

अर्शिया अनेजा
कक्षा 7

हिन्दुस्तान
Hindustan
शताब्दियों की दासता के बाद भारत में स्वतंत्रता का
मंगल प्रभात
बापू की चिर तपस्या सफल

क्या हम आजाद हैं ?

आज़ादी का विभिन्न व्यक्तियों के लिए विभिन्न अर्थ हैं। एक ग्यारह वर्ष के बालक के लिए माता-पिता का घर पर न रहना आज़ादी हो सकती हैं। उम्रकैदी के लिए जेल से रिहाई आज़ादी है। असाध्य रोग से पीड़ित व्यक्ति के लिए स्वस्थ होना आज़ादी हो सकती है। मेरे लिए भी आज़ादी का अर्थ इन सब से भिन्न है। मेरे लिए आजादी शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, धार्मिक, शैक्षणिक , न्यायिक, सामरिक और राजनैतिक स्वतंत्रता है ।

आज़ादी सिर्फ शरीर में बँधी रस्सियों से मुक्त होना ही नहीं अपितु अपने भीतर की बाधाओं को काट गिराना है। प्रश्न यह उठता है कि क्या आज हम आज़ाद हैं? क्या आज हम अपनी मर्ज़ी से जी रहे हैं? क्या हम अपनी आवाज़ उठा पा रहे हैं? क्या हम बिना डरे अपने विचारों को सामने ला रहे है ? क्या हम अपने आप से आज़ाद हैं ? नहीं।

वह दिन मेरे लिए आजादी का दिन होगा, जिस दिन दुनिया का हर एक व्यक्ति स्वयं की बनाई हुई रुकावटों को पार करेगा,जब दूसरे के कारण कोई व्यक्ति अपने आप को चुप नहीं करेगा। भयमुक्त वातावरण में अपनी रूचि का काम कर जीवन यापन कर सकेगा .किसी के लिए आजादी का अर्थ विकास है, किसी के लिए रोजगार, किसी के लिए एकता । आजादी केवल कहने से नहीं होती, वह तो अनुभव की जाती है।

जिस दिन प्रत्येक व्यक्ति हिंसा, असत्य आदि अवगुणों को पीछे छोड़ते हुए देश को प्रगति के पथ पर ले जाएगा, वही मेरे लिए आजादी होगी। आइये, आजादी के इस अमृत महोत्सव में वास्तविक आज़ादी के लिए एक बार फिर संकल्प लें ।

अरिंजया - कक्षा 8

हमारा देश भारत !

चाहे हो हिन्दू ,
या हो मुसलमान,या हो सिख- जाट
है तो सब एक ही मिटटी के इंसान।
यह मिटटी है भारत की ,
जहाँ कायरता किसी को आती नहीं ,
और वीरता किसी की जाती नहीं।
यह मातृभूमि है बलिदानों की ,
हिन्दुस्तानियो की।
जहाँ गर्व से प्रत्येक मनुष्य कहे ,
मैं हिंदुस्तानी हूँ ,
अंग्रेज़ो की बातों में नहीं ,
वीरो की मिटटी से हूँ !
मैं वह हिंदुस्तानी हूँ ,
जो गर्व से कहें ,
जय हिन्द !

साँची भावेश मालपानी
कक्षा 7

आजाद भारत की प्रथम झलकियाँ

एक मुलाकात...

मणिशंकर अय्यर एक कुशल भारतीय राजनीतिज्ञ हैं। उनकी आरंभिक शिक्षा देहरादून के प्रतिष्ठित विद्यालय "द दून" स्कूल से हुई और उच्च शिक्षा "सेंट स्टीफंस कॉलेज", दिल्ली से। दून में रहते हुए, उन्होंने "द दून स्कूल वीकली" के संपादन का कार्य भी किया। कुछ दिन पूर्व वे हमारे विद्यालय में आए और हमने उनसे बहुत से प्रश्न किए । उन्हीं प्रश्नों से कुछ अंश प्रस्तुत है –

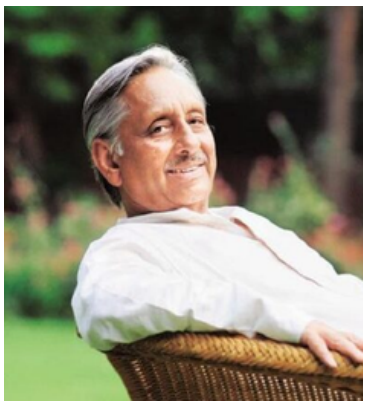

मणि शंकर अय्यर

क्षितिज -आपके व्यक्तित्व को उच्च स्तर पर पहुँचाने में शिक्षा संस्थानों का क्या योगदान रहा ?
मणि शंकर जी - किसी भी व्यक्ति के सर्वांगीण विकास में सर्वप्रथम भूमिका उसके विद्यालय की होती है। आत्मनिर्भरता, आत्मविश्वास, देशभक्ति, ये कुछ ऐसे मूल तत्व हैं जो मुझे अपने समस्त शैक्षणिक संस्थानों से प्राप्त हुए। मैं भाग्यशाली हूँ कि मुझे एक ऐसे विद्या के मंदिर में शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिला जिसका देश में एक विशिष्ट स्थान है। जीवन में जो कुछ पाने के लिए लोग कड़ी मेहनत करते हैं, वही सब मुझे बहुत आसानी से प्राप्त हो गया और इसका श्रेय मैं अपने शिक्षा संस्थानों को देना चाहूँगा ।
क्षितिज -आपने अनेक पुस्तकें लिखी हैं । आपकी प्रिय पुस्तक कौन सी हैं जिसे आप बार बार पढ़ना चाहेंगे और क्यों?
मणि शंकर जी- कॉलेज के समय जब मैं 20 वर्ष का था तबसे "लॉरेन्स डरल" की "जस्टिन" मेरी सबसे प्रिय किताब बन गई। इस किताब की कविता "द सिटी" मेरी सबसे मनपसंद कविता हैं।

क्षितिज -हम स्वतंत्रता के 75 वर्ष में हैं। आपके दृष्टिकोण में स्वतंत्रता क्या हैं ?
मणि शंकर जी-हमारे संविधान की शुरुआत स्वतंत्रता, समानता और भाईचारा शब्दों से हुई हैं ।मेरा मानना है कि अगर भाईचारा सभी धर्मों के लोगों के बीच हो और अपनी सोच और विचारों को व्यक्त करने में सभी सक्षम हों तो हम आजाद हैं ।
क्षितिज – हमारे विद्यालय की छात्राओं के लिए आप क्या संदेश देना चाहेंगे ?
मणि शंकर जी- मेरी प्रिय छात्राओं, याद रखो कि कोई भी हमेशा जीतता नहीं हैं। हार-जीत तो जीवन में होती ही रहती है। निरन्तर प्रयास में लगे रहो और डटे रहो।
तुम सभी के उज्ज्वल भविष्य के लिए मेरी अनेक शुभकामनाएँ ।

संपादिका
मनस्वी पंत

बापू की विनम्रता

गुजरात के राजकोट में एक अधिवेशन हो रहा था।वहाँ बापू अन्य बड़े नेताओं के साथ मंच पर बैठे थे। तभी उनकी दृष्टि दूर नीचे बैठे एक वृद्ध व्यक्ति पर पड़ी। उन्होंने तुरंत उन वृद्ध को पहचान लिया। वे बापू के प्राथमिक विद्यालय के अध्यापक थे।
बापू तुरंत मंच से उतरकर उनके पास पहुँचे और चरण छूकर प्रणाम किया। फिर वे वहीं उनके पैरों के पास बैठ गए। शिक्षक भावविभोर हो गए और बोले, "अब आप बहुत बड़े नेता हैं। आपका यहाँ बैठना अच्छा नहीं लगता। अब आप ऊपर मंच पर चले जाइये।"
बापू बोले, "आपके लिए तो मैं सदैव आपका शिष्य ही रहूँगा।" इसके बाद बापू पूरे कार्यक्रम में वहीं बैठे रहे। कार्यक्रम के समाप्त होने के बाद शिक्षक ने बापू को आशीर्वाद देते हुए कहा, "तुम जैसा विनम्र और अहंकाररहित व्यक्ति ही महान कहलाने का सच्चा अधिकारी है।"
इस लघु प्रेरक कहानी से सीख मिलती है कि विनम्रता, सादगी और अहंकाररहित जीवन जीने वाला व्यक्ति ही महान बनता है।

संकलित

गौरव के क्षण

- पूर्व वैल्हमाइट दीक्षा जोशी ने इस वर्ष यूपीएससी परीक्षा में अभूतपूर्व सफलता प्राप्त करते हुए अखिल भारतीय स्तर पर १९ वाँ स्थान प्राप्त किया।
- केया अग्रवाल ने दिसंबर में पुणे में आयोजित किकबॉक्सिंग स्पर्धा में राष्ट्रीय स्तर पर भाग लिया।
- पूर्व वैल्हमाइट रुशाली मुखर्जी ने एक किताब "मून चाइल्ड " लिखी एवं उसका प्रकाशन भी किया।
- तिशा वर्मा ने राष्ट्रीय स्तर पर भुवनेश्वर में आयोजित जूनियर नैशनल अक्वैटिक प्रतियोगिता में भाग लिया ।

दीक्षा जोशी

केया अग्रवाल

रुशाली मुखर्जी

मेरी स्वतंत्रता ...

सुगंधा मैम
सम्पूर्ण समाज में सबके बीच समानता का व्यवहार ही आजादी है ।

ममता मैम
इस समाज की पिछड़ी सोच से स्वतंत्रता पाने के लिए संघर्ष ही आजादी है ।

उपमा मैम
अपने नृत्य के माध्यम से अपने विचारों को व्यक्त करने की आज़ादी।

संजय कंडारी सर
किसी को आहत किए बिना जीवन को पूर्ण प्रसन्नता के साथ निर्वाह करना ही आज़ादी है।

अस्मिता मैम
भयमुक्त हो कर जीवन जीना ही आजादी है ।

नालंदा मैम
निर्भयतापूर्वक सत्य बोलना आजादी है ।

तुनश्री मैम
नए सपनों की नई उड़ान भरना मेरे लिए आजादी है ।

विभा मैम
जब आप दूसरों की भावनाओं को ठेस पहुँचाए बिना अपने व्यक्तित्व का विकास करने में सक्षम हों तो आप स्वतंत्र हैं।

अर्चना मैम
मेरी नज़र में आजादी का अर्थ, हर व्यक्ति को धर्म, जाति, रंग, स्तर, लिंग, देश आदि के दायरे से ऊपर अपनी क्षमता के अनुसार विकास करने के अवसर मिलना होगा।

सीमा मैम
आज़ादी का दुरूपयोग न करना और कुशलतापूर्ण जीवन जीना ही आज़ादी हैं।

कुसुम मैम
मन स्वतंत्र ,तन स्वतंत्र ,विचार स्वतंत्र ही स्वतंत्रता है ।

हमारे सहायकों के लिए आज़ादी

अनिता दीदी
मेरी लिए आज़ादी तब थी जब मैं अपने घर के कामों में व्यस्त नहीं थी और पूरा दिन फ़्री घूमती थी।

माली जी
खुली हवा में साँस लेना मेरे लिए आजादी है ।

चाँद बैराजी
लोगों की गुलामी न करना और खुले मन से कोई भी बात व्यक्त कर पाना आज़ादी है।

दीपा दीदी
आज़ादी उस दिन होगी जिस दिन महिलाओं को कोई बुरी नज़र से नहीं देखेगा।

संगीता दीदी
आज़ादी तब है जब काम समाप्त हो जाए।

गार्ड जी
निडर होना आज़ादी है।

वैल्हमाइट्स की अनोखी आज़ादी

दिन भर छात्रावास में सोनाऔर फिल्म देखना

अध्यापक कहें कि आज कक्षा नहीं होगी

जब मन करे तब पढ़ाई करना

माँ का घर से बाहर जाना

कोई जिम्मेदारी नहीं लेना ।

मैट्रन का अवकाश पर जाना

कक्षा से गायब होना

लैपटॉप मिल जाना

वैल्हम परिवार में आपका स्वागत है

श्री संजय कंडारी
गणित विभाग

सुश्री सत्यप्रिया
नृत्य कला विभाग

श्री अचिन जैन
गणित विभाग

सुश्री नीति चड्ढा
अंग्रेजी विभाग

नया दायित्व
करियर की नई कड़ी

सुश्री सपना शर्मा
करिअर परामर्शदात्री

विदाई

सुश्री जूही बाराकोटी
क्षितिज परिवार की ओर से आपके उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएँ ! आपकी शिक्षाएँ सदैव हमारे स्मृति -पटल पर रहेंगी ।

पुस्तक विमोचन

"अनवॉवन" जीवन के सर्वश्रेष्ठ अनुभवों पर लिखी गई पुस्तक है। इस पुस्तक में अनेक सुंदर कविताओं का संग्रह है। सुश्री शेफाली थपलियाल को पुस्तक प्रकाशित करने हेतु क्षितिज परिवार की ओर से अनंत शुभकामनाएँ ।

झाँसी वाली रानी मनु के लिए एक पत्र

आदरणीया लक्ष्मीबाई जी ,
शत् शत् नमन !
आशा करती हूँ कि आज भी आपका शीश, हम भारतवासियों और हमारी देश भक्ति को देख कर गौरान्वित हो उठता होगा। भारत और विश्व में आपका नाम लेने मात्र से ही समस्त स्त्रियों के मन में साहस और देश भक्ति की भावना जागृत हो उठती हैं, आपकी वीरता की मिसाल भारत की पुत्रियों को अपने और देश के स्वाभिमान की रक्षा करने के लिए प्रेरणा देती है। जिस प्रकार आपने अंग्रेज़ो के खिलाफ स्वराज के लिए नारी शक्ति का प्रदर्शन किया और मातृभूमि पर सर्वस्व न्यौछावर कर दिया, उसी प्रकार आज देश की अनेक वीरांगनाओं ने 'लक्ष्मी सेना' का निर्माण किया हैं और अपनी वसुधा की सुरक्षा के लिए निरंतर प्रयासरत हैं।
आप लाखों लोगों की प्रेरणा की स्रोत हैं। आपकी एक अनुयायी मैं भी हूँ। अपनी धरा के प्रति मेरे विचार भी आपकी देश भक्ति के विचारों के समान है। अंग्रेज़ो के कुशासन से भारत आप के समान सेनानियों के कारण मुक्त तो हो गया हैं , परंतु आज भी भारतवासियों पर अंग्रेजी संस्कृति हावी है। मैं भारतीय संस्कृति को पहले अपने देश में, फिर विश्व भर में प्रतिष्ठित करने के लिए प्रयासरत हूँ। आपके साहस के कारण भारत की बहुत सी स्त्रियों को उनका सम्मान वापस प्राप्त हुआ, किन्तु अभी भी बहुत कुछ शेष रह गया हैं। आप जिस प्रकार अंग्रेज़ों के विरूद्ध युद्ध भूमि में डटी रहीं और मरते दम तक झाँसी की ढाल बनी रहीं उसी प्रकार मैं भी आपको अपनी प्रेरणा स्त्रोत बनाकर मातृभूमि की सेवा में लग जाना चाहती हूँ तथा देश के सम्मान के लिए संघर्ष करना चाहती हूँ।
आपकी युद्ध कुशलता ही नहीं अपितु आपकी वीरता जिसके कारण आपने कई राज्यों को एक साथ लाकर अंग्रेजों के खिलाफ स्वतंत्रता संग्राम की नींव रखी, आज के दशक में भी हम सभी के लिए आदर्श है। आज भी आप हम सभी के बीच में कविताओं एवं पटकथाओं में जीवंत है। "**बुंदेले हर बोलो के मुँह, हमने सुनी कहानी थी ,खूब लड़ी मर्दानी वो तो झाँसी वाली रानी थी"।** मैं आपको आश्वस्त करती हूँ कि हम भारत की बेटियाँ आपके बलिदान को व्यर्थ न जाने देंगी और विश्व में भारत का परचम लहराने के लिए निरंतर प्रयत्नशील रहेंगी ।

वान्या गुप्ता
कक्षा 7

पते की बात : सोशल मीडिया से

यह तो अच्छा हुआ कि १९४७ में व्हाट्सअप नहीं था, वरना आज़ादी के लिए कोई युद्ध में उतरता ही नहीं। लोग घर बैठें ही कहते कि, इस मैसेज को इतनी बार फॉरवर्ड करो कि अंग्रेज खुद ही भारत छोड़ कर भाग जाएँ ।

हँसना ज़रूरी है

हमें एहसास नहीं होता कि समय कितनी जल्दी बीत जाता है। इस साल भारत स्वतंत्रता के ७५ वर्ष मना रहा है। भारत के १५ राष्ट्रपति बन चुके हैं और इस साल हँसना ज़रूरी है के इस लेख में हम समय की चंचलता के बारे में बात करेंगे। आइन्सटाइन जी ने तो बताया ही था कि समय द्रुत गति से भागता है। जब हम कक्षा में बैठकर नोट्स बना रहे होते है तो ऐसा लगता है कि समय कछुए की गति से बढ़ रहा है। जब लैपटॉप सामने हो तो न जाने किस बुलेट ट्रेन की गति से समय भागने लगता है। किसी भी वैल्हमाइट से कुछ काम करने के लिए पूछो तो एक ही जवाब मिलेगा -' मेरे पास समय ही नहीं है,'इसके उपरांत अवश्य उनके आते हुए कार्यकर्मों एवं प्रतिबद्धताओं की विस्तार पूर्वक कथा सुनने के लिए मिलेगी। वहीं अपने दोस्तों के साथ बैठकर बातें करने के लिए समय ही समय होता है। लेकिन दूसरी ओर आज मैं यह सब काम कैसे ख़त्म करूँगी',सुबह उठते ही सबसे पहला विचार यह ही होता है। अक्सर हम देखते हैं कि विद्यार्थी सबवे से भागकर नाश्ता करने आते हैं और वे इतनी जल्दी में होते हैं कि नाश्ता भी हाथ में लेकर निकल पड़ते हैं। परीक्षा से पहले जब हमें समय - सारणी दी जाती है तो ऐसा लगता है कि यह समय तो बीतने ही नहीं वाला पर जब पाठ्यक्रम सामने आता है तब ही असल में पता चलता है कि यह समय कम है। वैल्हमाइट्स कैम्पस पर हर जगह दिखते हैं और अंत तक सब अध्याय ही ख़त्म करने में लगे रहते है और उसके बाद भी कई तो पढ़ाई बिना ख़त्म करे ही चले जाते हैं और अनेकों परीक्षा में ही सो जाते हैं क्योंकि वे पिछली रात पूरा पाठ्यक्रम समाप्त करने के प्रयास में लगे हुए थे। परीक्षाओ के बारे में बातचीत भी करने से यह प्रतीत होता है कि समय व्यक्तिपरक है।समय का खेल तो देखिए, परीक्षाओं के दिनों में विद्यार्थी समय को पकड़ने के लिए इधर से उधर भागते दिखते हैं और उसी समय हमारे प्रिय अध्यापक आराम करते दिखाई देते है, परंतु परीक्षा के बाद बाद पासा पलट जाता है। अध्यापक लाल कलम और परीक्षा पत्रक लेकर भाग रहे होते हैं और वहीं विद्यार्थी ऐश कर रहे होते हैं ।

मन तो करता है कि समय की विचित्रता के विषय में और लिखें लेकिन क्या करें 'टाइम ही नहीं है।

अवानी जिंदल एवं हिमांशी गुप्ता
कक्षा 12

सुर्खियाँ ....

1. गुरु नानक पब्लिक स्कूल में आयोजित हिन्दी भाषण अंतरविद्यालय प्रतियोगिता में श्रीम मिगलानी ने भाग लिया और प्रथम सांत्वना पुरुस्कार प्राप्त किया।
2. श्रीराम सेटेंनियल स्कूल में आयोजित अंतरविद्यालय वाद -विवाद प्रतियोगिता में श्रीम मेघलानी एवं प्रणया दुआ ने भाग लेते हुए, प्रथम स्थान प्राप्त किया।
3. कसिगा स्कूल में आयोजित अन्तर्विद्यालय गीता पाठ प्रतियोगिता में वेल्हम गर्ल्स स्कूल की छात्राओं ने भाग लिया।
4. ICSE परीक्षा में कक्षा १० की केया अग्रवाल ने 99.4% अंकों के साथ सम्पूर्ण भारत में तीसरा स्थान प्राप्त किया ।
5. निकिता जैन, कार्तिकी एस महादिक एवं अनन्या मक्कर ने भरतनाट्यम नृत्य अरंगेत्रम की सुन्दर प्रस्तुति की।
6. विद्यालय में कलाक्षेत्र, भारतीय संस्कृति मंत्रालय द्वारा आजादी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में अंतर्राष्ट्रीय संगीत एवं नृत्य महोत्सव का कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया।

संपादक मंडल

प्रभारी शिक्षिका - डॉ ऋतु पाठक
मुख्य सम्पादिका - मनस्वी पंत
सहायक मण्डल:

- साँची मालपानी
- आद्या
- नविका जिंदल
- शाम्भवी चंद्रा
- वान्या गुप्ता
- आर्या शर्मा

मुख्य चित्रकार:

- अनन्या गुप्ता
- शाम्भवी चंद्रा

विशेष आभार
श्रीमती कुसुम दंडोना
एवं
समस्त हिन्दी विभाग

चलते-चलते

अंतर्मन की ज्वाला में
सन्देश छिपा है जीवन का,
जीत मिले तो करें न दम्भ और
हार मिले तो हो न रंज।
नित संघर्ष मंत्र है जीवन का,
सपने जिससे सच हो जाते।
जीवन के उपवन भी पुष्पित होकर
संगठन की शक्ति को दर्शाते।
हैं भले ही हम एक-एक ,
किन्तु मन में हैं आशाएँ अनेक।
जीवन के मधुर सफर में ,
दोनों मिल साथ निभाएँ ,
एक और एक ग्यारह कहलाएँ।
" क्षितिज परिवार "